



## मटर के साथ सैलरी उगाने से मुनाफा

जे.एन. भाटिया\* और आदित्य\*\*

सब्जी उत्पादन में मटर की खेती हरियाणा ही नहीं, बल्कि पूरे भारत में व्यापक स्तर पर की जा रही है। खेतों की घटती जोत, श्रमिकों की कमी तथा बढ़ती हुई मजदूरी की वजह से लागत ज्यादा तथा प्रति इकाई क्षेत्रफल से मुनाफा घटता जा रहा है। ऐसे हालातों में फसलों का मूल्यवर्द्धन बहुत ही जरूरी हो गया है, ताकि किसानों के शुद्ध लाभ को बढ़ाया जा सके। वर्तमान सरकारें भी इस दिशा में काफी प्रयासरत हैं। वैज्ञानिक भी किसानों को नई-नई प्रणाली अपनाने की सलाह दे रहे हैं। सब्जी के लिए उगाई जाने वाली मटर से अधिक लाभ प्राप्त करने हेतु अंतः फसल उगाना लाभदायक पाया गया है।

हरियाणा में कुरुक्षेत्र के आसपास के क्षेत्रों में कई वर्षों के अनुभव से किसानों के खेतों पर किसानों की सहभागिता पर किये गए शोध से मटर के साथ सैलरी की खेती बहुत फायदेमंद साबित हुई है। कुरुक्षेत्र के बीड़ अमीन, खासपुर, फतुहपुर व बराणी, पिण्डारसी व भैंसी माजरा के किसानों के साथ-साथ लाड़वा, कैथल में सीवन व चीका के किसान भी इस फसलचक्र से अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं। स्थानीय किसानों के मध्य सैलरी की



सैलरी

\*सेवानिवृत्त प्रोफेसर, प्लांट पैथोलॉजी, सीसीएस.एच. ए.यू., हिसार (हरियाणा); \*\*शोध छात्र

फसल को आमतौर पर सुनहरी के नाम से भी जाना जाता है।

सैलरी एक बहुउद्देशीय व औषधीय फसल है। सैलरी का सलाद के रूप में उपयोग के साथ-साथ औषधि के तौर पर भी प्रयोग किया जाता है। इसके पत्ते, तना व बीज में कई तरह के औषधीय गुण होते हैं, जिनसे कई तरह के रोगों का इलाज भी किया जाता है। सैलरी एक अति उत्तम एंटीऑक्सीडेंट (प्रतिउपचायक) है। इसमें खनिज लवण, विटामिन 'सी', विटामिन-बी<sub>6</sub>, विटामिन बी<sub>2</sub>, विटामिन 'सी' आदि का भरपूर भंडार है। इससे हमें कैल्शियम, मैग्नीशियम, लौह तत्व, फॉस्फोरस, पोटेशियम व सोडियम तत्व उपलब्ध होते हैं। सैलरी के प्रयोग से बनाई गई औषधियों से उत्तेजक, जिगर संबंधी रोग, मूत्रवर्द्धक, नाड़ियों में ऐंठन संबंधी रोग, वायु तथा शरीर में वायु, वात-विकार व बादी हटाने की दवा के रूप में प्रयोग किया जाता है। सैलरी का उपयोग वजन कम करने, कब्ज ठीक करने, उच्च रक्तचाप, कैंसर को रोकने, गुर्दे की पथरी न बनने, मधुमेह व घुटनों के दर्द व गर्मी के मौसम में ठंडक पहुंचाने के लिए भी लाभदायक पाया गया है।

सैलरी के औषधीय महत्व तथा विपणन में कोई समस्या न होते हुए इस फसल की काश्त को बढ़ावा देना किसानों के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है। अतः कृषि से अधिक लाभ लेने के लिए मटर के साथ सैलरी को मिश्रित खेती के तौर पर उगाया जा सकता है। किसानों के खेतों पर किए गए अनुभवों के आधार पर इस नई कृषि प्रणाली को अधिक लाभप्रद बनाया जा सकता है।



मटर-सैलरी फसल

### मटर-सैलरी उत्पादन

मटर व सैलरी की मिश्रित खेती के लिए अक्टूबर के तीसरे सप्ताह में खेतों की अच्छी तरह जुताई करके सैलरी के बीज को 4 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से छिटकवां विधि से बिजाई करें, जबकि मटर की बिजाई बैड प्लांटर से करें। एक एकड़ में 35-50 कि.ग्रा. बीज को राइजोबियम टीके से उपचारित करके 35 कि.ग्रा. शुद्ध नाइट्रोजन, 24 कि.ग्रा. शुद्ध फॉस्फोरस तथा 30 कि.ग्रा. पोटाश का प्रयोग करें। फॉस्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा मटर बिजाई के समय ही डालें, जबकि नाइट्रोजन खाद की आधी मात्रा दूसरी सिंचाई के बाद व आधी तीसरी किश्त सिंचाई के बाद प्रयोग करें। मटर की फसल में 3-4 सिंचाइयां पर्याप्त रहती हैं। मटर की तुड़ाई सामान्यतः दिसम्बर के आखिरी सप्ताह से मध्य फरवरी तक की जा सकती है। इसमें किसान को प्रति एकड़ 50-55 क्विंटल हरे मटर की उपलब्धता हो जाती है।

मध्य फरवरी के बाद जब मटर की तुड़ाई पूरी हो जाए, तब सैलरी में 15-20 दिनों के अंतराल पर फसल में दो गुड़ाई पर्याप्त हैं। इन दो गुड़ाइयों के उपरान्त सैलरी की फसल में 23 कि.ग्रा. नाइट्रोजन प्रति एकड़ डालने की सिफारिश की जाती है। सैलरी की भरपूर फसल लेने के लिए फूल आते समय

व दाने पकते समय सिंचाई अवश्य करनी चाहिए। अप्रैल के अंत में फसल पककर तैयार हो जाती है तथा सैलरी की प्रति एकड़ 7-8 क्विंटल पैदावार प्राप्त हो जाती है। आमतौर पर सैलरी का भाव 6-8 हजार रुपये प्रति क्विंटल रहता है। राजस्थान के व्यापारी लाड़वा मण्डी से प्रत्येक वर्ष इसे खरीदते हैं। यह राजस्थान की फसल है तथा हरियाणा में सैलरी का क्षेत्रफल कुरुक्षेत्र व कैथल जिले के कुछ गांवों में ही है, जबकि हरियाणा में सैलरी का औसत उत्पादन राजस्थान से कहीं ज्यादा है। सैलरी की कटाई हाथों से करनी पड़ती है और एक से दो दिनों बाद कम्बाइन से थ्रेशिंग की जाती है। ध्यान रहे कि थ्रेशिंग कटाई के एक-दो दिनों बाद कर लेनी चाहिए वरना सैलरी खेत में ही झड़ने का डर बना रहता है। यदि किसान उपयुक्त तरीके से मटर के साथ सैलरी की काश्त करते हैं, तो निश्चित तौर पर यह कृषि प्रणाली उनकी आमदनी को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकती है।



सैलरी की फसल